''बढ़ती हुई ताकत''

ग्राम समूह दाडमिया एवं बांसडिया, ओगणा, झाडोल, जिला उदयपुर मछली पालन की ओर अग्रसर

1. **प्रस्तावना :–** जिला उदयपुर की पंचायत समिति झाडोल प्रखण्ड़ के ओगणा क्षैत्र से 6 कि.मी. दूर पश्चिम दिशा में स्थित अरावली पर्वतमाला के बीच दाड़मिया व बांसड़िया गांव बसे हुये है। इन दोनो गांवों के बीच बन्ध ओगणा स्थित है यह क्षैत्र आदिवासी बाहुल्य है यह आदिवासी आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से कमजोर है इनके विकास के लियें केन्द्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनायें चलाई हुई है।

2. **स्वयं सहायता समूहों का गठन** :– इन गांवों के विकास हेतु मुख्य तया शिक्षा, वन संरक्षण, चारागाह विकास आदि हेतु वर्ष 2002 में गांव दाडमिया में विजय लक्ष्मी स्वयं सहायता समुह एवं गांव वासड़िया में आसापुरा स्वयं सहायता समुह का गठन वर्ष 2007 में सेवा मन्दिर संस्थान द्वारा किया। गांव दाडमिया में ग्राम विकास कोष वर्ष 2003 में गठित हुआ। इन समुहों के गठन के उपरान्त राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ क्षैत्र के आदिवासियों को मिलना प्रारम्भ हुआ।

3. **मत्स्य पालन प्रशिक्षण :–** ग्राम समुह दाडमिया, बांसड़िया व महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को सेवा मन्दिर के सहयोग से ओगणा बान्ध में मछली पालन के लियें 40 महिलाओं को जो स्वयं सहायता समुह की सदस्य थी उन्हें कार्यालय – मत्स्य प्रशिक्षण विद्यालय, उदयपुर द्वारा 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 3.01.2007 से 13.01.2007 तक दिया गया था।

4. **मत्स्य पालन हेतु जलाश्य आवंटन :–** जलाश्य आंवटन हेतु दोनो ही महिला स्वयं सहायता समुहों द्वारा काफी सघर्ष किया, क्योंकि पूर्व में ग्राम पंचायत, पंचायत समिति द्वारा उक्त जलाश्य का मत्स्य ठेका दिया जाता था जिससे जो अधिक राशि देता ठेका उसी के नाम से होता था। महिला स्वयं सहायता समुहों की महिलाओं के पास इतनी राशि नही थी कि वह तालाब को ठेके पर ले सके। जलाश्य आवंटन हेतु दोनो ही महिला सहायता समुह द्वारा सेवा मन्दिर मत्स्य विभाग, जिला परिषद, विकास अधिकारी का सहयोग लेकर

दिनांक 28.08.2009 को ग्रामसभा की बैठक में ओगणा डैम को 41,000/–रूपयें में 5 वर्षो हेतु उक्त दोनो समूहों को आंवटन किया गया।

5. **रिवोलविंग फंड़ :–** दोनो महिला स्वयं सहायता समुहों को आर्थिक रूप से सुदणीकरण हेतु मत्स्य विभाग राजस्थान जयपुर द्वारा 10,000/–रूपयें प्रति समुह रिवोलविंग फंड के रूप में वर्ष 2008 में दिये गये थे जिससे मत्स्य पालन में काम आने वाले उपकरण जैसे नाव, जाल, मत्स्य बीज आदि खरीदने में सहयोग मिल सके।

6. **मछुआरा आवास निर्माण :–** केन्द्रीय प्रवर्तित योजना में आदर्श मछुआरा ग्राम विकास योजना में दोनो महिला स्वयं सहायता समुह की 40 महिलाओं के लियें आवासों का निर्माण वर्ष 2010–11 में प्रारम्भ करवाया गया है। जिसमें मत्स्य विभाग द्वारा प्रतिआवास 50,000/–रूपयें की राशि सेवा मन्दिर संस्थान उदयपुर के माध्यम से दी है। तकनिकी कार्य में सहयोग सेवा मन्दिर द्वारा करवाया जा रहा है। मत्स्य कृषकों द्वारा मजदूरी एवं रॉमटेरियल उपलब्ध करवाया जाता है माह अगस्त 2011 तक समस्त आवासों का निर्माण कार्य पुर्ण होने की सम्भावना है।

7. **तकनीकी मार्गदर्शन :–** दोनो स्वयं सहायता समुहों का सेवा मन्दिर के द्वारा मत्स्य पालन में जैस मत्स्य बीज संग्रहण, नाव, जाल, मत्स्य उत्पादन आदि कार्यों में तकनीकी मार्गदर्शन लगातार दिया जा रहा है इससे इन्हें प्रोटीन युक्त आहार तो प्राप्त हुआ ही है एवं आर्थिक लाभ भी हो रहा है।

झींगा पालन ने खोले खुशहाली के द्वार

बांसवाडा जिले की बागीदौरा तहसील अन्तर्गत शेरगढ गांव के रतन तालाब में मई 2007 में मत्स्य कृषक श्री फरीद गुल खां ने झींगा पालन गतिविधियों को शुरु किया जो कि आज तक निरन्तर चल रही है साथ ही इनके देखा देख अन्य कृषकों का भी झींगा पालन की तरफ रुझान बढा है। वर्ष 2007 में मत्स्य कृषक द्वारा भरुच (गुजरात) से बीज लाया गया और तालाब में छोडे। छः माह में झींगा अपने औसत पूर्ण आकार में आ गये। नवम्बर 2007 में इनका संग्रहण कर भरुच ले जाकर विपणन किया। इसके पश्चात माह अगस्त 2011 तक प्रति माह 300 किलो ग्राम झींगा भरुच ले जाकर बेचा एवं 5 माह में 1500 किलो ग्राम झींगा बेचकर मत्स्य कृषक 2.25 लाख की शुद्ध आय पाई।